

र्भारदास के पद **रि**



(1)

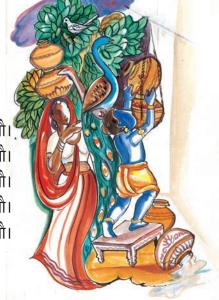
मैया, कबहिं बढ़ैगी चोटी?

किती बार मोहिं दूध पियत भई, यह अजहूँ है छोटी। तू जो कहित बल की बेनी ज्यौं, ह्वै है लाँबी-मोटी। काढ़त-गुहत न्हवावत जैहै, नागिनी सी भुइँ लोटी। काँचौ दूध पियावत पिच-पिच, देति न माखन-रोटी। सूर चिरजीवौ दोउ भैया, हिर-हलधर की जोटी।

(2)

तेरैं लाल मेरौ माखन खायौ।

दुपहर दिवस जानि घर सूनो ढूँढ़ि-ढँढ़ोरि आपही आयौ। खोलि किवारि, पैठि मंदिर मैं, दूध-दही सब सखनि खवायौ। ऊखल चिढ़, सींके कौ लीन्हो, अनभावत भुइँ मैं ढरकायौ। दिन प्रति हानि होति गोरस की, यह ढोटा कौनैं ढँग लायौ। सूर स्थाम कौं हटकि न राखै तैं ही पूत अनोखो जायौ।









प्रश्न-अभ्यास

- 1. बालक श्रीकृष्ण किस लोभ के कारण दूध पीने के लिए तैयार हुए?
- 2. श्रीकृष्ण अपनी चोटी के विषय में क्या-क्या सोच रहे थे?
- 3. दूध की तुलना में श्रीकृष्ण कौन-से खाद्य पदार्थ को अधिक पसंद करते हैं?
- 4. 'तैं ही पूत अनोखौ जायौ'— पंक्तियों में ग्वालन के मन के कौन-से भाव मुखरित हो रहे हैं?
- 5. मक्खन चुराते और खाते समय श्रीकृष्ण थोड़ा-सा मक्खन बिखरा क्यों देते हैं?
- 6. दोनों पदों में से आपको कौन-सा पद अधिक अच्छा लगा और क्यों?



अनुमान और कल्पना

- 1. दूसरे पद को पढ़कर बताइए कि आपके अनुसार उस समय श्रीकृष्ण की उम्र क्या रही होगी?
- 2. ऐसा हुआ हो कभी कि माँ के मना करने पर भी घर में उपलब्ध किसी स्वादिष्ट वस्तु को आपने चुपके-चुपके थोड़ा-बहुत खा लिया हो और चोरी पकड़े जाने पर कोई बहाना भी बनाया हो। अपनी आपबीती की तुलना श्रीकृष्ण की बाल लीला से कीजिए।
- 3. किसी ऐसी घटना के विषय में लिखिए जब किसी ने आपकी शिकायत की हो और फिर आपके किसी अभिभावक (माता-पिता, बड़ा भाई-बहिन इत्यादि) ने आपसे उत्तर माँगा हो।



भाषा की बात

- श्रीकृष्ण गोपियों का माखन चुरा-चुराकर खाते थे इसलिए उन्हें माखन चुरानेवाला भी कहा गया है। इसके लिए एक शब्द दीजिए।
- 2. श्रीकृष्ण के लिए पाँच पर्यायवाची शब्द लिखिए।



3. कुछ शब्द परस्पर मिलते-जुलते अर्थवाले होते हैं, उन्हें पर्यायवाची कहते हैं। और कुछ विपरीत अर्थवाले भी। समानार्थी शब्द पर्यायवाची कहे जाते हैं और विपरीतार्थक शब्द विलोम. जैसे-

पर्यायवाची— चंद्रमा–शशि, इंदु, राका मधुकर-भ्रमर, भौरा, मधुप सूर्य-रवि, भानु, दिनकर

विपरीतार्थक- दिन-रात श्वेत-श्याम शीत-उष्ण

पाठों से दोनों प्रकार के शब्दों को खोजकर लिखिए।

शब्दार्थ

अजह्रँ हरि-हलधर- कृष्ण-बलराम – आज भी जोटी जोडी – बलराम बल - चोटी पैठि घुसकर बेनी ह्वे – होगी सींके छींका जिसमें दूध-दही आदि रखा जाता है – बाल बनाना काढ्त - गाय के दूध से बने पदार्थ गोरस - गुँथना गुहत दही, मक्खन, घी आदि - पृथ्वी, भूमि भुइँ – लोटने लगी ढोटा लड्का लोटी पचि-पचि - बार-बार

